सम्पादकीय परामर्श मण्डल

- प्रो. वीरेन्द्र मोहन, हिन्दी विभाग
- प्रो. ए.एन. शर्मा, मानवशास्त्र विभाग
- प्रो. पी.पी. सिंह, विधि विभाग
- प्रो. ब्रजेश कुमार श्रीवास्तव, इतिहास विभाग
- डॉ. अनुपमा कौशिक, राजनीतिशास्त्र विभाग

मध्य भारती

मानविकी एवं समाजविज्ञान की द्विभाषी शोध-पत्रिका

अंक-74, जनवरी-जून 2018

ISSN 0974-0066 (पूर्व-समीक्षित अर्द्धवार्षिक शोध-पत्रिका)

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

यू.जी.सी. द्वारा मान्य पत्रिकाओं की सूची (प.सं.-48918) में सम्मिलित।

प्रकाशित रचनाओं के अभिमत से डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर या सम्पादकों की सहमति अनिवार्य नहीं है।

सम्पादकीय पत्र व्यवहार :

मध्य भारती

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय

सागर - 470003 (म.प्र.)

दूरभाष : (07582) 264455

ई-मेल : madhyabharti.2016@gmail.com

आवरण : डॉ. छबिल कुमार मेहेर

मुद्रण :

अमन प्रकाशन

कटरा नमक मंडी, सागर (म.प्र.)

सदस्यता शुल्क		
	प्रति अंक	आजीवन
व्यक्तिगत	रु. 150/-	रु. 2000/-
संस्थागत	रु. 200/-	रु. 4000/-

अनुक्रमणिका

भास्कराचार्य रचित गणितीय कृति लीलावती : एक अवलोकन — 5
रामप्रसाद

आधुनिकता के परिप्रेक्ष्य में छायावाद — 23
कामिनी

बौद्ध धर्म-दर्शन और मार्क्सवाद के साथ दलित साहित्य का अंतर्सम्बन्ध — 32
दीपक सिंह

भारतीय ज्ञान परम्परा में कामशास्त्र का इतिहास — 38
राघवेन्द्र मिश्र

धर्म और विज्ञान का अंतर्विरोध — 59
अनिल कुमार तिवारी

कमलेश्वर के 'काली आंधी' उपन्यास में स्त्री-विमर्श — 68
संजीव कुमार विश्वकर्मा

शास्त्रीय संगीत में लोक संगीत के तत्त्व — 73
बृजेश मिश्रा

गाँधी के राष्ट्रवाद की अवधारणा — 83
पंकज सिंह

भरहुत की कला में प्रतिबिम्बित लोक जीवन — 94
कृष्ण देव पाण्डेय

समकालीन समाज-दर्शन और स्वामी विवेकानन्द — 103
शैल कुमारी

मध्यप्रदेश की संस्कृति में छतरपुर अंचल की भूमिका — 118
विशाल विक्रम सिंह

एशियाई परिदृश्य और भारत-चीन संबंध — 128
नेहा निरंजन

'उस जनपद का कवि हूँ' : कविता के सरोकार — 135
दुर्गेश वाजपेयी

महिला सशक्तीकरण में महिला पुलिस की भूमिका के प्रति महिलाओं का दृष्टिकोण (सागर नगर के परिप्रेक्ष्य में एक अध्ययन) — 146
विवेक मेहता

ISSN- 0974 - 0066
जन. - जून - 2018

महिला सशक्तीकरण में महिला पुलिस की भूमिका के प्रति महिलाओं का दृष्टिकोण

(सागर नगर के परिप्रेक्ष्य में एक अध्ययन)

विवेक मेहता

भूमिका

दुर्गा सप्तशती में सर्वभूतों में व्याप्त शक्ति की आराधना शक्ति, विद्या, लक्ष्मी आदि रूप में करते हुए 'मातृ' रूप में भी की गई है।[1] मातृशक्ति के प्रति ऐसे भाव वाला हमारा जगद्गुरु भारत वर्ष विगत 1000 वर्षों से विभिन्न राजनैतिक, धार्मिक या सामाजिक शासकों की दुर्वृत्ति का परिणाम भोग रहा है। लगभग 600 से 700 वर्षों तक मुगल आक्रांताओं का शासन, लगभग 300 वर्ष अंग्रेजों के दमनकारी शासन में शासकों की मनोवृत्ति का जो प्रभाव महिलाओं पर पड़ा वह सर्वविदित है। किंतु आजद भारत का 70 वर्षों का शासन मातृशक्ति को अबला से सबला बनाने में प्रयत्नशील है यह घनघोर आश्चर्य का एवं चिंतन का विषय है। स्वामी विवेकानंद ने मनु के बरक्स कहा है, ''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः। यत्रै तास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्रफलाः क्रिया।।'' अर्थात्, सभी जातियां, सभी राष्ट्र स्त्रियों को समाज में सम्मान का दर्जा देकर ही महान बने हैं। जिस देश, जिस जाति में नारियों की पूजा नहीं होती वह जाति कभी बड़ी नहीं बन सकती। जहाँ नारियाँ दुःखी रहती हैं, पीड़ित हैं और प्रताड़ित होती हैं, उपेक्षित होती हैं उस परिवार अथवा उस देश की उन्नति की आशा करना आकाश कुसुम के समान है। इस दार्शनिक दृष्टिकोण के उपरान्त भी भारत उस मुगलकालीन या अंग्रेजियत की मानसिकता से उबर नहीं पा रहा है और जो वास्तव में न केवल कानूनन अपितु प्राकृतिक आधार पर भी जिस अधिकार की अधिष्ठात्री है वह मातृशक्ति स्वयं के सशक्तीकरण से वंचित है। प्रकृति के रहस्यों को समझ पाना आज भी मानव मस्तिष्क से परे है। प्रकृति ने समूचे मनुष्य जीवन को स्त्री तथा पुरुष के रूप में संवारा है। संसार में कुल जनसंख्या का लगभग आधा भाग स्त्रियों का ही है। भारत में नारी क अस्तित्व के संदर्भ में युगों के अंतर से अवधारणाएँ बदलती रही हैं। महिलाओं का सशक्तीकरण एक समाज जनित अवधारणा है जिसमें अनेक समाजशास्त्री, साहित्यकार, शिक्षाशास्त्री, राजनीतिज्ञ एवं समस्त बुद्धिजीवी वर्ग इसे अपने-अपने तरीकों से परिभाषित करते रहते हैं। यह इनकी मानसिक वेदना की परिणति है या पुरुष प्रधानता का सामाजिक स्वभाव, सदैव एक जटिल प्रश्न रहेगा। जो स्वयं शक्ति का पुंज है, जो ज्ञान का अथाह सागर है, जो लक्ष्मी रूपेण है, जो समस्त मनुष्य जाति की जननी है। आज के समय में सशक्तीकरण की अभिलाषा लिये सतत् प्रयत्नशील है। महिलाओं के सशक्तीकरण में महिला पुलिस एक पद सोपान के रूप में अपनी महती भूमिका का निर्वहन कर रही है। निःसंदेह सरकार और समाज महिलाओं के सशक्तीकरण हेतु विभिन्न क्षेत्रों में

मध्य भारती-74, जनवरी-जून, 2018, ISSN 0974-0066, *pp 146-155*

self attested

मध्य भारती

मानविकी एवं समाजविज्ञान की द्विभाषी शोध-पत्रिका

ISSN 0974-0066

(अंक-74, जनवरी-जून, 2018)

संरक्षक

प्रो. राघवेन्द्र पी. तिवारी

कुलपति

प्रधान सम्पादक

प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा

सम्पादक

प्रो. निवेदिता मैत्रा

डॉ. पंकज चतुर्वेदी

डॉ. आशुतोष कुमार मिश्र

प्रबन्ध सम्पादक

डॉ. छबिल कुमार मेहेर

Self attested

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय

सागर (मध्यप्रदेश) - 470003

दूरभाष : (07582) 264455

ई-मेल : madhyabharti.2016@gmail.com